

करो मेति रारि ( १७ )

प्यारे कान्हा छोड़ि मेरी डगर ।

कहें करते हो रारि तुम डीठ लंगर ॥

कैसे छोड़ू डगर मै गोपी तेरी

बिना दान दिए चलती राह मेरी

सब दिननि का हिसाब मेरे आगे तूं धरि ॥१॥

नहीं ब्राह्मण है तू पुण्य तिथि ना कोई

काहे भिक्षा मांगे कैसी बुद्धि है भई

सब वस्तु भरी हैं लाल तेरे ही घर ॥२॥

मै बृज का राजा मेरी राजधानी है

नहीं मानें हुकुम करती मनमानी है

छीन लूंगा दही सब गोपी पकड़ ॥३॥

कौन माने राजा तुम्हें सांवरे अहीर

ओ धेनु चरैया तुम कब भए अमीर

अपने माता पिता को तू जसवान कर ॥४॥

न लो बाप का नाम अरी डीठ गुवाली

करूं कैसे सहन तेरी ऐसी कुचाली  
मुझ से मांगो माफी अब जोड़ दोऊ कर ॥५॥

गोपी कान्हा की मधुर ये लीला प्यारी  
नित गावत रसिक लोक वेद न्यारी  
साई साहिब सतिसंग में भी हर्ष नितु भर ॥६॥